विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – षष्ठ **दिनांक -१४- ०७ - २०२१**

विषय -हिन्दी **विषय शिक्षक -पंकज कुमार**

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों रामवृक्ष बेनीपुरी जी के जीवन परिचय के बारे में अध्ययन करेंगे।

संक्षिप्त जीवनपरिचय:

पूरा नाम: रामवृक्ष बेनीपुरी
जन्म: 23 दिसम्बर, 1899
जन्मस्थान: मुज़फ़्फ़रपुर, बिहार
मृत्यु: 9 सितम्बर, 1968
मृत्युस्थान: बिहार
कर्मभूमि: भारत
कर्म-क्षेत्र: साहित्य, राजनीति, स्वतंत्रता सेनानी
प्रसिद्धि: स्वतंत्रता सेनानी, पत्रकार, साहित्यकार, नाटककार, कहानीकार, निबन्धकार, उपन्यासकार, उत्कृष्ट रेखाचित्र लेखक।
नागरिकता: भारतीय
अन्य जानकारी: रामवृक्ष बेनीपुरी जी 1957 में बिहार विधान सभा के सदस्य चुने गए थे। सादा जीवन और उच्च विचार के आदर्श पर चलते हुए इन्होंने साहित्य साधना के साथ-साथ समाज सेवा के क्षेत्र में भी अद्भुत काम किया था।

जीवन परिचय:

रामवृक्ष बेनीपुरी का जन्म सन 1902 में बिहार के मुजफ्फरपुर जिले के बेनीपुर गांव में हुआ था। इनके पिता श्री कुलवंत सिंह एक साधारण किसान थे। बचपन में ही इनके माता-पिता का देहांत हो गया था और उनका लालन-पालन इनकी मौसी की देखरेख में हुआ। इनकी प्रारंभिक शिक्षा बेनीपुर में ही हुई। बाद में इनकी शिक्षा इनके ननिहाल में भी हुई।

मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण करने से पूर्व ही सन 1920 में इन्होंने अध्ययन छोड़ दिया और महात्मा गांधी के नेतृत्व में प्रारंभ हुए असहयोग आंदोलन में कूद पड़े। बाद में इन्होंने हिंदी साहित्य सम्मेलन से विशारद

की परीक्षा उत्तीर्ण की। यह राष्ट्र सेवा के साथ-साथ साहित्य की भी साधना करते रहे। साहित्य की तरफ इनकी रूचि रामचरितमानस के अध्ययन से जागृत हुई। 15 वर्ष की आयु से ही ये पत्र-पत्रिकाओं में लिखने लगे थे। देश सेवा की ललक और भारतीय स्वतत्रता संग्राम में सक्रिय भागीदारी के परिणाम स्वरुप इनको अनेक वर्षों तक जेल की यातनाएं भी सहनी पड़ी। सन 1968 ईस्वी में इनका देहांत हो गया।

बेनीपुरी जी के निबंध संस्मरणात्मक और भावात्मक है। भावुक हृदय के तीव्र उच्छवास की छाया इनके प्राय: सभी निबंधों में विद्यमान है।
इन्होंने जो कुछ लिखा है, वह स्वतंत्र भाव से लिखा है। ये एक राजनीतिक और सामाजिक व्यक्ति थे। विधान सभा सम्मेलन, किसान सभा, राष्ट्रीय आंदोलन, विदेश यात्रा, भाषा आंदोलन, आदि के बीच में रमे रहते हुए भी इनका साहित्यकार व्यक्तित्व हिंदी साहित्य को अनेक सुंदर ग्रंथ दे गया।